

परशुराम चालोसा

दोहा 1

श्री गुरु चरण सरोज छवि, निज मन मन्दिर धारि।
सुमरि गजानन शारदा, गहि आशिष त्रिपुरारि॥

दोहा 2

बुद्धिहीन जन जानिये, अवगुणों का भण्डार।
बरणों परशुराम सुयश, निज मति के अनुसार॥

चौपाई 1

जय प्रभु परशुराम सुख सागर।
जय मुनीश गुण ज्ञान दिवाकर॥

चौपाई 2

भृगुकुल मुकुट बिकट रणधीरा।
क्षत्रिय तेज मुख संत शरीरा॥

चौपाई 3

जमदग्नी सुत रेणुका जाया।
तेज प्रताप सकल जग छाया॥

चौपाई 4

मास बैसाख सित पच्छ उदारा।
तृतीया पुनर्वसु मनुहारा॥

चौपाई 5

प्रहर प्रथम निशा शीत न घामा।
तिथि प्रदोष व्यापि सुखधामा॥

चौपाई 6

तब ऋषि कुटीर रुदन शिशु कीन्हा।
रेणुका कोखि जनम हरि लीन्हा॥

चौपाई 7

निज घर उच्च ग्रह छः ठाढ़े।
मिथुन राशि राहु सुख गाढ़े॥

चौपाई 8

तेज-ज्ञान मिल नर तनु धारा।
जमदग्नी घर ब्रह्म अवतारा॥

चौपाई 9

धरा राम शिशु पावन नामा।
नाम जपत जग लह विश्रामा॥

चौपाई 10

भाल त्रिपुण्ड जटा सिर सुन्दर।
कांधे मुंज जनेउ मनहर॥

चौपाई 11

मंजु मेखला कटि मृगछाला।
रूद्र माला बर वक्ष बिशाला॥

चौपाई 12

पीत बसन सुन्दर तनु सोहैं।
कंध तुणीर धनुष मन मोहैं॥

चौपाई 13

वेद-पुराण-श्रुति-स्मृति ज्ञाता।
क्रोध रूप तुम जग विख्याता॥

चौपाई 14

दायें हाथ श्रीपरशु उठावा।
बेद-संहिता बायें सुहावा॥

चौपाई 15

विद्यावान गुण ज्ञान अपारा।
शास्त्र-शस्त्र दोउ पर अधिकारा॥

चौपाई 16

भुवन चारिदस अरू नवखंडा।
चहुं दिशि सुयश प्रताप प्रचंडा॥

चौपाई 17

एक बार गणपति के संग।
जूझे भृगुकुल कमल पतंगा॥

चौपाई 18

दांत तोड़ रण कीन्ह विरामा।
एक दंत गणपति भयो नामा॥

चौपाई 19

कार्तवीर्य अर्जुन भूपाला।
सहस्रबाहु दुर्जन विकराला॥

चौपाई 20

सुरगऊ लखि जमदग्नी पांहीं।
रखिहुं निज घर ठानि मन मांहीं॥

चौपाई 21

मिली न मांगि तब कीन्ह लड़ाई।
भयो पराजित जगत हंसाई॥

चौपाई 22

तन खल हृदय भई रिस गाढ़ी।
रिपुता मुनि सौं अतिसय बाढ़ी॥

चौपाई 23

ऋषिवर रहे ध्यान लवलीना।
तिन्ह पर शक्तिघात नृप कीन्हा॥

चौपाई 24

लगत शक्ति जमदग्री निपाता।
मनहुं क्षत्रिकुल बाम विधाता॥

चौपाई 25

पितु-बध मातु-रूदन सुनि भारा।
भा अति क्रोध मन शोक अपारा॥

चौपाई 26

कर गहि तीक्ष्ण परशु कराला।
दुष्ट हनन कीन्हेउ तत्काला॥

चौपाई 27

क्षत्रिय रुधिर पितु तर्पण कीन्हा।
पितु-बध प्रतिशोध सुत लीन्हा॥

चौपाई 28

इक्कीस बार भू क्षत्रिय बिहीनी।
छीन धरा बिप्रन्ह कहँ दीनी॥

चौपाई 29

जुग त्रेता कर चरित सुहाई।
शिव-धनु भंग कीन्ह रघुराई॥

चौपाई 30

गुरु धनु भंजक रिपु करि जाना।
तब समूल नाश ताहि ठाना॥

चौपाई 31

कर जोरि तब राम रघुराई।
बिनय कीन्ही पुनि शक्ति दिखाई॥

चौपाई 32

भीष्म द्रोण कर्ण बलवन्ता।
भये शिष्या द्वापर महँ अनन्ता॥

चौपाई 33

शस्त्र विद्या देह सुयश कमावा।
गुरु प्रताप दिगन्त फिरावा॥

चौपाई 34

चारों युग तव महिमा गाई।
सुर मुनि मनुज दनुज समुदाई॥

चौपाई 35

दे कश्यप सों संपदा भाई।
तप कीन्हा महेन्द्र गिरि जाई॥

चौपाई 36

अब लौं लीन समाधि नाथा।
सकल लोक नावड़ नित माथा॥

चौपाई 37

चारों वर्ण एक सम जाना।
समदर्शी प्रभु तुम भगवाना॥

चौपाई 38

ललहिं चारि फल शरण तुम्हारी।
देव दनुज नर भूप भिखारी॥

चौपाई 39

जो यह पढ़ै श्री परशु चालीसा।
तिन्ह अनुकूल सदा गौरीसा॥

चौपाई 40

पूर्णेन्दु निसि बासर स्वामी।
बसहु हृदय प्रभु अन्तरयामी॥

समापन दोहा

परशुराम को चारु चरित, मेढत सकल अज्ञान।
शरण पड़े को देत प्रभु, सदा सुयश सम्मान॥

श्लोक

भृगुदेव कुलं भानुं, सहसबाहुर्मर्दनम्।
रेणुका नयना नंदं, परशुवन्दे विप्रधनम्॥